

रविवार 20 सितंबर, 2020

विषय — सामग्री

स्वर्ण पाठ: प्रेरितों के काम 20 : 35

"लेने से देना धन्य है॥"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 97 : 1, 6, 7, 9, 11, 12

- 1 यहोवा राजा हुआ है, पृथ्वी मगन हो; और द्वीप जो बहुतेरे हैं, वह भी आनन्द करें!
- 6 आकाश ने उसके धर्म की साक्षी दी; और देश देश के सब लोगों ने उसकी महिमा देखी है।
- 7 जितने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना करते और मूर्तों पर फूलते हैं, वे लज्जित हों; हे सब देवताओं तुम उसी को दण्डवत करो।
- 9 क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है; तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है।
- 11 धर्मी के लिये ज्योति, और सीधे मन वालों के लिये आनन्द बोया गया है।
- 12 हे धर्मियों यहोवा के कारण आनन्दित हो; और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. हबक्कूक 2 : 20 (यहोवा)

²⁰ ... यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है; समस्त पृथ्वी उसके साम्हने शान्त रहे॥

2. 1 यूहन्ना 2 : 15-17

¹⁵ तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है।

- 16 क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।
- 17 और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा॥

3. 1 राजा 21 : 1 (नाबोत)-4 (अप्रसन्न), 4 (और वह), 7, 8 (से 1st,), 9 (कहने से), 13, 17, 18, 20, 27-29

- 1 नाबोत नाम एक यिज्जेली की एक दाख की बारी शोमरोन के राजा अहाब के राजमन्दिर के पास यिज्जेल में थी।
- 2 इन बातों के बाद अहाब ने नाबोत से कहा, तेरी दाख की बारी मेरे घर के पास है, तू उसे मुझे दे कि मैं उस में साग पात की बारी लगाऊं; और मैं उसके बदले तुझे उस से अच्छी एक वाटिका दूंगा, नहीं तो तेरी इच्छा हो तो मैं तुझे उसका मूल्य दे दूंगा।
- 3 नाबोत ने यहाब से कहा, यहोवा न करे कि मैं अपने पुरखाओं का निज भाग तुझे दूं!
- 4 ... अहाब उदास और अप्रसन्न हो कर अपने घर गया, और बिछौने पर लेट गया और मुंह फेर लिया, और कुछ भोजन न किया।
- 7 उसकी पत्नी ईज़ेबेल ने उस से कहा, क्या तू इस्राएल पर राज्य करता है कि नहीं? उठ कर भोजन कर; और तेरा मन आनन्दित हो; यिज्जेली नाबोत की दाख की बारी मैं तुझे दिलवा दूंगी।
- 8 तब उसने अहाब के नाम से चिट्ठी लिखकर उसकी।
- 9 ... उसने यों लिखा, कि उपवास का प्रचार करो, और नाबोत को लोगों के साम्हने ऊंचे स्थान पर बैठाना।
- 13 तब दो नीच जन आकर उसके सम्मुख बैठ गए; और उन नीच जनों ने लोगों लोगों के साम्हने नाबोत के विरुद्ध यह साक्षी दी, कि नाबोत ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की। इस पर उन्होंने उसे नगर से बाहर ले जा कर उसको पत्थरवाह किया, और वह मर गया।
- 17 तब यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुंचा, कि चल,
- 18 शोमरोन में रहने वाले इस्राएल के राजा अहाब से मिलने को जा; वह तो नाबोत की दाख की बारी में है, उसे अपने अधिकार में लेने को वह वहां गया है।
- 20 एलिय्याह को देख कर अहाब ने कहा, हे मेरे शत्रु! क्या तू ने मेरा पता लगाया है? उसने कहा हां, लगाया तो है; और इसका कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिये तू ने अपने को बेच डाला है।
- 27 एलिय्याह के ये वचन सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़े, और अपनी देह पर टाट लपेट कर उपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने लगा, और दबे पांवों चलने लगा।

- 28 और यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुंचा,
- 29 कि क्या तू ने देखा है कि अहाब मेरे साम्हने नम्र बन गया है? इस कारण कि वह मेरे साम्हने नम्र बन गया है मैं वह विपत्ति उसके जीते जी उस पर न डालूंगा परन्तु उसके पुत्र के दिनों में मैं उसके घराने पर वह विपत्ति भेजूंगा।

4. लूका 19 : 1 (यीशु)-10

- 1 वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था।
- 2 और देखो, ज़क्कई नाम एक मनुष्य था जो चुंगी लेने वालों का सरदार और धनी था।
- 3 वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा था।
- 4 तब उस को देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने वाला था।
- 5 जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर दृष्टि कर के उस से कहा; हे ज़क्कई झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।
- 6 वह तुरन्त उतर कर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया।
- 7 यह देख कर सब लोगे कुड़कुड़ा कर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है।
- 8 ज़क्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं।
- 9 तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है।

5. मरकुस 12 : 41-44

- 41 और वह मन्दिर के भण्डार के साम्हने बैठकर देख रहा था, कि लोग मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे डालते हैं, और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला।
- 42 इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर दो दमडियां, जो एक अधेले के बराबर होती है, डालीं।
- 43 तब उस ने अपने चेलों को पास बुलाकर उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है।
- 44 क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इस ने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।

6. मत्ती 5 : 2

- 2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

7. मत्ती 6 : 19-21

- 19 अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।
20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।
21 क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।

8. 2 कुरिन्थियों 9 : 6-11

- 6 परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।
7 हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है।
8 और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।
9 जैसा लिखा है, उस ने बिथराया, उस ने कंगालों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा।
10 सो जो बोने वाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा।
11 कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 468 : 8-15

सवाल। — होने का वैज्ञानिक कथन क्या है?

उत्तर। —पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है। आत्मा अमर सत्य है; मामला नश्वर त्रुटि है। आत्मा ही वास्तविक और शाश्वत है; पदार्थ असत्य और लौकिक है। आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी छवि और समानता है। इसलिए आदमी भौतिक नहीं है; वह आध्यात्मिक है।

2. 477 : 9-17

जो कुछ भी भौतिक है वह नश्वर है। पांच शारीरिक इंद्रियों के लिए, मनुष्य पदार्थ और मन को एकजुट प्रतीत होता है; लेकिन क्राइस्टियन साइंस मनुष्य को ईश्वर के विचार के रूप में प्रकट करता है, और शारीरिक इंद्रियों को नश्वर और दुराचारी होने की घोषणा करता है। ईश्वरीय विज्ञान यह दिखाता है कि यह असंभव है कि एक भौतिक शरीर, मनुष्य होना चाहिए, हालांकि पदार्थ के उच्चतम स्तर के साथ जुड़ा हुआ है, यही इसका गलत नाम है - वास्तविक और पूर्ण मनुष्य, होने का अमर विचार, अविनाशी और शाश्वत

3. 279 : 13-21, 26-29

आत्मा और पदार्थ न तो सहअस्तित्व कर सकते हैं और न ही सहयोग कर सकते हैं, और सत्य को छोड़कर कोई और नहीं बना सकता है, त्रुटि पैदा कर सकता है, या इसके विपरीत।

अनुपात के अनुसार यह विश्वास गायब हो जाता है कि जीवन और बुद्धि पदार्थ के हैं या होने के अमर तथ्य हैं, और उनका एकमात्र विचार या बुद्धिमत्ता ईश्वर में है। शाश्वत जीवन और सत्य और प्रेम की समझ और प्रदर्शन के माध्यम से ही आत्मा तक पहुंचा जाता है।

एक तार्किक और वैज्ञानिक निष्कर्ष केवल इस ज्ञान के माध्यम से पहुंचता है कि होने के दो आधार नहीं हैं, पदार्थ और मन, लेकिन एक अकेले - मन।

4. 301 : 17-23, 24-29

जैसा कि ईश्वर पदार्थ है और मनुष्य ईश्वरीय छवि और समानता है, मनुष्य को आत्मा के पदार्थ की इच्छा करनी चाहिए, केवल पदार्थ की, न कि पदार्थ की और वास्तव में उसने ऐसा किया है। यह विश्वास कि मनुष्य के पास कोई अन्य पदार्थ या मन है, आध्यात्मिक नहीं है और पहले आज्ञा को तोड़ता है, आप एक ईश्वर को, एक मन को स्वीकार करेंगे। ... भ्रम, पाप, बीमारी और मृत्यु भौतिक अर्थों की झूठी गवाही से उत्पन्न होती है, जो कि अनंत आत्मा की केंद्रीय दूरी के बाहर एक निश्चित दृष्टिकोण से, मन और पदार्थ की एक उलटी छवि प्रस्तुत करता है और सब कुछ उल्टा हो जाता है।

5. 269 : 21-28

भौतिक इंद्रियों की गवाही न तो पूर्ण है और न ही दिव्य है। इसलिए मैं अपने आप को यीशु के उपदेशों पर, भविष्यद्वक्ताओं के, और मन के विज्ञान की गवाही पर अनारक्षित रूप से रोपित करता हूँ। अन्य नींव वहाँ कोई नहीं हैं। अन्य सभी प्रणालियाँ - सिस्टम पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से ज्ञान के आधार पर भौतिक इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं - हवा से हिलती हुई चट्टानें हैं, न कि चट्टान पर बने मकान।

6. 326 : 8-14

सभी प्रकृति मनुष्य को ईश्वर का प्यार सिखाती है, लेकिन मनुष्य ईश्वर से प्रेम नहीं कर सकता है और आध्यात्मिक चीजों पर अपना पूरा प्यार कायम कर सकता है, जबकि सामग्री से प्रेम कर सकता है या आध्यात्मिक से अधिक उस पर भरोसा कर सकता है।

हमें भौतिक प्रणालियों की नींव का त्याग करना चाहिए, केवल समय-सम्मानित, अगर हम अपने एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में मसीह को प्राप्त करेंगे।

7. 593: 6 (से 2nd.)

बटुआ. सामग्री में खजाना रखना; त्रुटि।

8. 262 : 17-26

अय्यूब ने कहा: "मैं कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आंखें तुझे देखती हैं;" पुरुष अय्यूब के विचार को प्रतिध्वनित करेंगे, जब पदार्थ का दर्द और सुख पूर्वसूचक होना बंद हो जाएगा। वे फिर जीवन और खुशी, खुशी और दुःख के झूठे अनुमान को छोड़ देंगे, और प्रेमपूर्वक आनंद प्राप्त करने, धैर्य से काम लेने और ईश्वर के विपरीत सभी को जीतने का आनंद प्राप्त करेंगे। एक उच्च दृष्टिकोण से शुरू, कोई अनायास उठता है, यहां तक कि प्रकाश बिना प्रयास के प्रकाश का उत्सर्जन करता है; इसलिये "क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।"

9. 272 : 19-25

यह भौतिक जीवन के भयावह रूप से परिणाम के विपरीत, दैनिक जीवन के विचार और ईसाईकरण का आध्यात्मिकीकरण है; यह शुद्धता और पवित्रता, कामुकता और अशुद्धता के नीचे की ओर झुकाव और सांसारिक गुरुत्वाकर्षण के विपरीत है, जो वास्तव में क्राइस्टियन साइंस के दिव्य उत्पत्ति और संचालन को प्रमाणित करता है।

10. 322 : 26-5

पदार्थ के सपोसिटिव जीवन में विश्वास के तेज अनुभव, साथ ही साथ हमारी निराशा और निरंतर व्यर्थ, हमें थका हुआ बच्चों की तरह दिव्य प्रेम की ओर मोड़ते हैं। तब हम जीवन को दिव्य विज्ञान में सीखना शुरू करते हैं। वीनिंग की इस प्रक्रिया के बिना, "क्या तू खोज कर ईश्वर को खोज सकता है?" सत्य को स्वयं की गलती से छुटकारा देने के लिए इच्छा करना आसान है। मुर्दा लोग क्रिश्चियन साइंस की समझ की तलाश कर सकते हैं, लेकिन वे क्राइस्टचियन साइंस से उनके लिए प्रयास किए बिना तथ्यों को चमकने में सक्षम नहीं होंगे। इस संघर्ष में हर तरह की त्रुटि का त्याग करने और कोई अन्य चेतना नहीं बल्कि अच्छा होने का प्रयास शामिल है।

11. 61 : 4-11

मानव के हित में अच्छाई बुराई पर अध्यात्म और पशु पर आधिपत्य होना चाहिए, या सुख कभी नहीं जीता जाएगा। इस खगोलीय स्थिति की प्राप्ति हमारे पूर्वजन्म को कम करेगी, अपराध को कम करेगी, और महत्वाकांक्षा को उच्च लक्ष्य देगी। पाप की हर घाटी को ऊंचा किया जाना चाहिए, और स्वार्थ के हर पहाड़ को नीचे लाया जाना चाहिए, ताकि विज्ञान में हमारे भगवान का राजमार्ग तैयार हो सके।

12. 518 : 15-19

सभी को एक ही सिद्धांत, या पिता, को एक भव्य भाईचारे में रखते हुए, आत्मा में समृद्ध गरीबों की मदद करते हैं। और धन्य है वह आदमी जो दूसरे की भलाई में अपनी भलाई जानता है, अपने भाई की आवश्यकता को देखता है और उसकी आपूर्ति करता है।

13. 451 : 14-18

मनुष्य उस दिशा में चलता है जिस ओर वह देखता है, और जहां उसका खजाना है, वहां उसका दिल भी होगा। यदि हमारी आशाएँ और स्नेह आध्यात्मिक हैं, तो वे ऊपर से आते हैं, नीचे से नहीं, और अतीत की तरह वे आत्मा के फल का उत्पादन करते हैं।

14. 390 : 9-11

सत्य हम सभी को आत्मा के सुख के लिए सुखों और दुखों के आदान-प्रदान के लिए मजबूर करेगा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6